चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा प्रदत्त दीक्षाएं, कब और कहां :एक अनुशीलन

– डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ सागर

महामंत्री – प्राकृत भाषा विकास फाउण्डेशन

संयुक्त मंत्री – अ.भा.दि. जैन शास्त्रिपरिषद्

जिनेन्द्र भगवान के शासन में सभी का कल्याण हो, यह बात स्पष्ट रूप से कही गयी है। यह बात सभी जीवों पर समान रूप से लागू होती है। जो जीव अपना कल्याण चाहता है, संसार के दुःखों से निवृत्ति चाहता है वह अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए जिनमार्ग पर आरूढ़ हो जाए, निश्चित ही वह कल्याण को प्राप्त होगा। ऐसा यह उत्कृष्ट जिनमार्ग है। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र जिनमार्ग है। इस रत्यत्रय को ग्रहण करने के लिए सभी प्रकार के परिग्रह से निवृत्ति और आसक्ति के सद्भाव और दुर्भाव, दोनों का परित्याग आवश्यक होता है। सकल संग से दूर होकर स्वसंग में लीन होना ही सही मायने में जिनमार्ग है। जो जिनमार्गी है वह निश्चित ही आत्मप्रभावनीय है। ऐसे आत्मप्रभावनीय बनने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ-साथ अत्यंत प्रगाढ़ श्रद्धा आवश्यक है।

काल का प्रभाव अत्यंत प्रभावशाली है। काल केवल व्यक्ति को ही प्रभावित नहीं करता है अपितु धर्म और धर्मात्मा को भी प्रभावित करता है। इस कलिकाल में, ऐसा भी समय आया, जब दिगम्बर मुनिराज के दर्शन अत्यंत दुर्लभ हो गए। श्रावक भी दिगम्बर मुनिराज की चर्या और व्यक्तित्व को जानने और समझने में अनभिज्ञ होते गए। प्रत्येक युग में कोई न कोई युगदृष्टा ऐसा होता है जिसके

होने से और जिसके न होने पर भी कालान्तर में धर्म की वृद्धि होती रहती है। एक ऐसे ही दिगम्बर जैन चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांतिसागरजी महाराज हुए हैं, जब वे थे, तब तक जिनधर्म की प्रभावना का जो स्वरूप था, वह तो अपने महानतम स्वरूप में था ही, लेकिन उनके द्वारा जो जिनधर्म की प्रभावना का बीज वपन किया गया, उस बीज ने आज न जाने कितने वटवृक्षों का रूप ले लिया है और ले रहा है। ऐसी उत्कृष्ट चर्या, आचार संहिता का पालन, निर्ममत्व जीवन शैली, संग के प्रति अनासक्ति का भाव, जिनधर्म की प्रभावना के लिए सावचेत, शिष्यानुग्रह, वात्सल्यभाव के धारी, श्रेष्ठ जीवन शैली, निर्भीकता, दृढ़ता के साथ जिनधर्म की प्रभावना के लिए अनवरत संलग्नता, राष्ट्र के प्रति अद्वितीय मनोभाव, जीव मात्र के कल्याण की भावना से समन्वित आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज का जीवन दिगम्बरत्व की साधना का अद्वितीय उदाहरण है, जो कि हमें आज आदर्श संत के रूप में स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है।

यहाँ हम इस लेख में समझेंगे कि आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने अपने दिगम्बरत्व की चर्या का पालन करते हुए अनेक भव्य जीवों के कल्याण की भावना को भाया है और स्वयं मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होकर उन्हें भी मोक्षमार्ग में लगाया है। निश्चित ही, स्वामी वही है जो अपने आश्रितों को, भक्तों को, शिष्यों को अपने जैसा बना लें। सही मायने में, आप सच्चे स्वामी ही हैं, जिन्होंने अपने सभी भक्तों-शिष्यों को अपने जैसा उत्कृष्ट बनाया है मोक्षमार्ग में लगाया है। जिन आगम में जिनदीक्षा के लिए प्रव्रज्या शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके संबंध में कथन है।

- **प्रव्रज्या शब्द का प्रयोग –** प्रव्रज्या शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से जैन धर्म और बौद्ध धर्म में संन्यास या भिक्षु धर्म ग्रहण करने की विधि के लिए किया जाता है। इसका अर्थ है घरबार छोड़कर, सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर, धार्मिक जीवन जीना है।
- **प्रव्रज्या शब्द की व्युत्पत्ति एवं अर्थ –** जैन दर्शन में दीक्षा के प्रवज्या शब्द का प्रयोग बहुलता से हुआ है। प्रवज्या के मायने हैं – प्र+व्रज+ व्रजयजोर्भावे क्यप्। इति भावे क्यप्रत्ययः। सन्न्यासः। व्रज धातु का प्रयोग गत्यर्थक होता है। जो सदा प्रकृष्ट रूप से गतिमान् है वह साधु है। गोचरसंचरेति। इति घप्रत्ययेन

निपातनात् साधुः। सन्न्यास शब्द के मायने हैं - सांसारिक जीवन का परित्याग करना आध्यात्मिक जीवन यापन करना।

❖ **प्रव्रज्या (दीक्षा) का स्वरूप** - बोधपाहुड में कहा गया है -

गिहगंथमोहमुक्का बावीसपरीषहा जियकसाया । पावारंभविमुक्का पव्वज्जा एरिसा भणिया ।45। सत्तू मित्ते य समा पसंसणिद्दा अलद्धिलद्धिसमा । तणकणए समभावा पव्वजा एरिसा भणिया ।47। जहजायसरूवसरिसा अवलंविय णिराउहा संता । परकियणिलयणिवासा पव्वज्जा एरिसा भणिया ।51।... सरीरसंक्कार वज्जिया रूक्खा ।52।[1]

गृह और परिग्रह तथा उनके ममत्व से जो रहित है, बाईस परीषह तथा कषायों को जिसने जीता है, पापारंभ से जो रहित है, ऐसी प्रव्रज्या जिनदेव ने कही है ।जिसमें शत्रु-मित्र में, प्रशंसा-निंदा में, लाभ व अलाभ में तथा तृण व कांचन में समभाव है, ऐसी प्रव्रज्या कही है । यथाजात रूपधर, लंबायमान भुजा, निरायुध, शांत, दूसरों के द्वारा बनायी हुई वस्तिका में वास। शरीर के संस्कार से रहित, तथा तैलादि के मर्दन से रहित, रूक्ष शरीर सहित ऐसी प्रव्रज्या कही गयी है। वैराग्य की उत्तम भूमिका को प्राप्त होकर मुमुक्षु व्यक्ति अपने सब सगे-संबंधियों से क्षमा माँगकर, गुरु की शरण में जा, संपूर्ण परिग्रह का त्याग कर देता है और ज्ञाता-द्रष्टा रहता हुआ साम्य जीवन बिताने की प्रतिज्ञा करता है ।इसे ही प्रव्रज्या या जिनदीक्षा कहते हैं । पंचम काल में भी उत्तम कुल का व्यक्ति प्रव्रज्या ग्रहण करने के योग्य है।

जब जीव ऐसे उत्कृष्ट भाव बना लेता है। तब उसे दीक्षा लेना चाहिए। जो दीक्षा ले, उसके पास विशिष्टता का सद्भाव होना चाहिए। जिसका कुल गोत्र विशुद्ध है, चारित्र उत्तम है, मुख सुंदर है और प्रतिभा अच्छी है, ऐसा पुरुष ही दीक्षा ग्रहण करने के योग्य माना गया है ।[2] जो मनुष्य शांत होगा, तप के

---

[1] बोधपाहुड़/ मू.व.टी./45-59

[2] विशुद्धकुलगोत्रस्य सद्वृत्तस्य वपुष्मतः ।
दीक्षायोग्यत्वमाम्नातं सुमुखस्य सुमेधसः ।158। महापुराण/39/158

लिए समर्थ होगा, निर्दोष ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का और सुंदर शरीर के अवयवों का धारक होगा वही निर्ग्रंथ लिंग के ग्रहण करने में योग्य है अन्य नहीं ।[3] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का, नीरोग, तप में समर्थ, अति बालत्व व वृद्धत्व से रहित योग्य आयु का, सुंदर, दुराचारादि लोकापवाद से रहित पुरुष ही जिनलिंग को ग्रहण करने के योग्य होता है ।[4]

❖ **कुलाचार के पालक आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज – डरने की क्या बात है ? यदि व्रत पालने के योग्य सामग्री न रहेगी तो हम जंगल में रहकर समाधि धारण कर लेंगे।** डंके की चोट पर उद्घोष करते हुए उनके ये शब्द दिगम्बरतव का शंखनाद करने वाले हैं। इतनी अधिक दृढ़ता के साथ आचार्यश्री ने मुनिव्रत को धारण किया था। अपने कुलाचार के पालन में वे मुनि बनने के पूर्व ही दृढ़ रहे हैं। **हमें कभी भय नहीं लगता। यहाँ तो भीति की कोई बात भी नहीं थी। यदि सर्प का और हमारा पूर्व का बैर होगा, तो वह बाधा करेगा, अन्यथा नहीं। उस सर्प ने हमारा कुछ बिगाड़ नहीं किया।** यह प्रसंग सर्प द्वारा किए गए उपसर्ग के समय का है। उनकी दृढ़ता और सभी जीवों के प्रति साम्य भाव, उनके जीवन के कुलाचारों के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। आचार्यश्री ने अपने संयमी **जीवन में 35000 मील से** अधिक पद विहार किया । **सिंहनिष्क्रीड़ित, चारित्र शुद्धि, तीस चौबीसी, कवलचन्द्रायण आदि अनेक व्रतों को करते हुए जीवन में कुल 9938 उपवास, रसपरित्याग इत्यादि बहिरंग और अंतरंग तप किए। जिनालय की रक्षार्थ 3 वर्ष 12 दिन तक अन्न ग्रहण का त्याग** कर धर्मरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा की।

आचार्यश्री ने स्वयं कुलाचार का पालन करके पहले दिखाया है। उसी कुलाचार का पालन आज आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के सम्पूर्ण संघ में स्पष्ट रूप से दिख रहा है। **निश्चित ही जो करके दिखाता है उसी का प्रभाव पड़ता है कहने वाले तो संसार में ढेरों में हैं।**

---

[3] शांतस्तपःक्षमोऽकुत्सो वर्णेष्वेकतमस्त्रिषु ।
कल्याणांगो नरो योग्यो लिंगस्य ग्रहणे मतः ।51। यो.सा.आ./8/51

[4] वण्णेसु तीसु एक्को कल्लाणंगो तवोसहो वयसा ।
सुमुहो कुंछारहिदो लिंगग्गहणे हवदि जोग्गो ।प्रवचनसार / तात्पर्यवृत्ति/225 प्रक्षेपक गा. 10/305

❖ **दीक्षा देकर उपकार किया –** आचार्यश्री शांतिसागर महाराज ने अपने आत्मकल्याण के लिए मुनिमार्ग को चुना था। उनका उद्देश्य स्वकल्याण ही रहा है। अपने कल्याण की भावना के साथ-साथ अन्य जीवों का उपकार और कल्याण हो जाए, ऐसा उनका सर्वश्रेष्ठ चिंतन रहा होगा। सो इस मार्ग पर बढ़ने वाले जीवों के लिए सदा उन्होंने प्रेरणा दी और अनेकानेक शिष्यों ने अपना आत्मकल्याण किया और यह परम्परा अनवरत रूप से आज तक चली आ रही है और चलती रहेगी।

❖ **दीक्षित शिष्य –** आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज द्वारा 26 मुनि, 5 आर्यिका, 16 एलक, 28 क्षुल्लक, 13 क्षुल्लिकाएं कुल 88 दीक्षाएं और सैकड़ों व्रती श्रावकरूप चतुर्विध संघ दीक्षित हुआ है। उन्होंने आचार्य पद 36 दिवसीय सल्लेखना के मध्य 26 अगस्त 1955 को पत्र लिखाकर अपने प्रथम निर्ग्रन्थ शिष्य मुनिश्री वीरसागरजी को आचार्यपद प्रदान किया।

❖ **चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज के दीक्षित शिष्य गण – यहाँ पर आचार्यश्री द्वारा दीक्षित साधुओं की सूचियाँ संलग्न हैं। ये सूचियाँ पंडितश्री सुमेरचन्द जैन दिवाकर सिवनी द्वारा लिखित चारित्र चक्रवती पुस्तक से साभार संलग्न हैं[5] –**

मुनिदीक्षा

क्र.	मुनि अवस्था का नाम	पूर्व का नाम	निवासी	दीक्षा तिथि संवत्	दीक्षा स्थल
1	श्री 108 वीरसागर जी	श्री हीरालालजी	वीरगांव	आ. शु. 11, 2450	समडोली
2	श्री 108 नेमीसागर जी	श्री नेमाप्पा जी	कुड़ची	आ. शु.11. 2450	समडोली
3	श्री 108 नेमीसागर जी	-	पुत्तूर (कर्नाटक)	ज्ये. शु.5, 2451	ऐनापुर
4	श्री 108 वृषभसेन जी	-	अड़गुर(हासन)	फा. शु.8, 2451	श्रवणबेलगोला
5	श्री 108 चन्द्रसागर जी	एलक चन्द्रसागर	नांद गांव	मा. शु.5,2456	सोनागिरजी
6	श्री 108 पायसागर जी		गोकाक	मा. शु. 5, 2456	सोनागिर जी
7	श्री 108 कुंथुसागर जी	पार्श्वकीर्ति	ऐनापुर	मा. शु.5,2456	सोनागिर जी
8	श्री 108 नमिसागर जी	एलक नमिसागर	शिवापुर	मा. शु. 5, 2456	सोनागिर जी

[5] चारित्र चक्रवर्ती- पं. सुमेरचन्द जैन दिवाकर सिवनी

9	श्री 108 पारीससागरजी	ए. पारीससागर	गोकाक		
10	श्री 108 आदिसागर जी	क्षु. आदिसागर	गया	फा. शु. 11, 2460	प्रतापगढ़
11	श्री 108 सुधर्मसागर जी	क्षु. ज्ञानसागर	चावली	फा. शु. 12, 2460	प्रतापगढ़
12	श्री108 वर्धमानसागरजी	ए. वर्धमानसागर	भोज	मग. शु.6, सन् 1936	बारामती
13	श्री 108 अनंतकीर्तिजी	-	बेलगांव	-	-
14	श्री 108 देवसेन जी	क्षु. देवसेन	-	फा. शु.8, 2451	-
15	श्री 108 सुरम्यसागरजी	क्षु. अमोघसागर	-	-	-
16	श्री 108 अजितसागर	-	-	-	-
17	श्री 108 धर्मसागरजी	ए. सन्मतिसागर	पाच्छापुर	-	-
18	श्री 108 श्रुतसागरजी	-	-	-	-
19	श्री 108 पद्मसागर जी	-	-	-	-
20	श्री 108 देवसागर जी	-	-	-	-
21	श्री 108 चंद्रसागर जी	-	पुत्तूरकर	-	-
22	श्री 108 अनंतकीर्तिजी	-	उत्तूरकर	-	-
23	श्री 108 पार्श्वकीर्तिजी	-	-	-	-
24	श्री 108 समंतभद्रजी	-	-	-	-
25	श्री 108 अनंतसागरजी	-	-	-	-
26	श्री 108 आदिसागर जी	क्षु. नेमकीर्ति	-	-	प्रतापगढ़

स्रोत –

- क्र. सं. 1 से 8 शांति सिंधु विशेषांक, सोलापुर, 16 जुलाई 1937
- क्र.सं. 9 आचार्यश्री शान्तिसागर जी के संघ की हस्तलिखित डायरी से
- क्रमांक। 10 आचार्य श्री शांतिसागर चरित्र (हिन्दी) (अ. श्री कुन्थुसागर जी) पृ. 125
- क्रमांक 11 शांति सिंधु विशेषांक, 16 जुलाई 1937
- क्र.सं. 12 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 404, (अष्ट्म संस्करण) पृ. 533
- क्रमांक। 13 श्री शांतिसागर महामुनि के चरित्र (द्वितीय संस्करण) (वंशीधर जी) पृ. 53
- क्रमांक। 14 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 33
- क्रमांक। 15 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 142

- क्रमांक। 16 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 110
- क्र.सं. 17 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 446, (अष्ट्म संस्करण) पृ. 582
- क्र.सं. 18 से 21 जैन गजट श्रद्धांजलि विशेषांक, 18 मार्च 1956, पृ. 192
- क्र.सं. 22 से 23 जैन मित्र, सन् 1956 (8-1)
- क्र.सं. 24 जैन मित्र्र, सन् 1956 (8-1)
- क्र.सं. 25 जैन गजट आचार्य शांतिसागर हीरक जयन्ती विशेषांक, पृ. 113
- क्र.सं. 26 जैन गजट आचार्य शांतिसागर हीरक जयन्ती विशेषांक, पृ. 121

आर्यिका दीक्षा[6]

क्र.	आर्यिका अवस्था का नाम	पूर्व का नाम	निवासी	दीक्षा तिथि संवत्	दीक्षा स्थल
1	श्री 105 शांतिमती	रत्नाबाई पाटील	रुकड़ी	आ.शु.11, 2450	समडोली
2	श्री 105 चन्द्रमती	क्षु. चंद्रमती	लोणंद	मा.शु.5, 2460	चित्तौड़
3	श्री 105 विमलमती	-	-	-	-
4	श्री 105 धर्ममती	-	-	-	-
5	**श्री 105**	**गुलाबबाई**	**जयपुर**		

स्रोत –

- क्र. सं. 1 शांति सिंधु विशेषांक, सोलापुर, 16 जुलाई 1937
- क्र.सं. 2 से 3 आचार्यश्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (आचार्यश्री कुंथुसागरजी) पृ.110
- क्र.सं. 4 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 295, (अष्ट्म संस्करण) पृ. 404

---

1. क्र.सं. 1 आ.शान्तिसागर चारित्र मराठी(यशवंत नाद्रे)
2. [6] क्र. सं. 2 शांति सिंधु विशेषांक, 16 जुलाई 1937
3. क्रमांक 3 से 4 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 110
4. क्रमांक 5 चरित्र चक्रवर्ती, (दूसरा संस्करण) पृ. 295, (आठवां संस्करण) पृ. 404

एलक दीक्षा

क्र.	एलक अवस्था का नाम	पूर्व का नाम	निवासी	दीक्षा तिथि संवत्	दीक्षा स्थल
1	श्री 105 पारीससागर जी	पिताम्बर	गोकक	का. शु. 14, 2450	गोकक
2	श्री 105 चन्द्रसागरजी	खुशालचंद	नांदगाँव	आ.शु.11, 2450	समडोली
3	श्री 105 पायसागरजी	-	पुत्तूर	फा.शु. 9, 2451	श्रवणबेलगोला
4	श्री 105 पार्श्वकीर्तिजी	रामकोट वाले	ऐनापुर	भा.शु.14, 2451	कुंभोज
5	श्री 105 नमिसागर जी	होणापा	शिवापुर	पौ.शु. 6, 2454	अक्कलकोट
6	श्री 105 वर्धमानसागर	देवगौडा	भोज	आ.शु.13, 2463	गजपंथा
7	श्री 105 सन्मतिसागरजी	क्षु. यशोधर	-	आ.शु.10, 2463	गजपंथा
8	श्री 105 नेमिसागरजी	श्री नेमण्णा	कुड़ची	-	गोकाक
9	श्री 105 पायसागर जी	-	-	-	गोकाक
10	श्री 105 पायसागर जी	-	गोकाक	-	-
11	श्री 105 पायसागर जी	-	ऐनापुर	-	-
12	श्री 105 पायसागर जी	-	शिवापुर	-	-
13	श्री 105 अनंतकीर्तिजी	-	-	-	-
14	श्री 105 सुमतिसागरजी	-	-	-	-
15	श्री 105 विमलसागरजी	-	-	-	-
16	श्री 105 धर्मसागरजी	-	-	-	-

स्रोत –

- क्र. सं. 1 से 7 आचार्यश्री शान्तिसागर महाराज के संघ की हस्तलिखित डायरी से
- क्र.सं. 8 से 9 चारित्र चक्रवर्ती (द्वितीय संस्करण) पृ. 427, (अष्टम् संस्करण) पृ. 560
- क्र.सं. 10 से 12 श्री शान्तिसागर महामुनि का चरित्र (द्वितीय संस्करण) (वंशीधर जी) पृ. 53
- क्र.सं. 13 श्री शान्तिसागर महामुनि का चरित्र (द्वितीय संस्करण) (वंशीधर जी) पृ. 108
- क्र.सं. 14 आचार्यश्री शान्तिसागर चरित्रम् (हिन्दी) (आ. श्री कुन्थुसागर जी) पृ. 134
- क्र.सं. 15 से 16 जैन गजट आचार्य शांतिसागर हीरक जयन्ती विशेषांक, पृ. 113

क्षुल्लक दीक्षा

क्र.	क्षुल्लक अवस्था का नाम	पूर्व का नाम	निवासी	दीक्षा तिथि संवत्	दीक्षा स्थल
1	श्री 105 नेमकीर्तिजी	ब्र. चांदमल जी	गया	श्रा. शु.6, 2459	ब्यावर
2	श्री 105 ज्ञानसागर जी	पं. नंदलाल	चावली	ज्ये. शु.9, 2456	अलीगढ़
3	श्री 105 यशोधर जी	कुलप्पा भरमप्पा मिरजे	पाच्छापुर	मा. शु. 10, 2458	तिजारा
4	श्री 105 नेमिसागर जी	भाऊ	समडोलीकर	–	–
5	श्री 105 शुभचंद्रजी	देवपाल नैनार	अंतमंगल कंची	फा. शु. 13, 2451	श्रवणबेलगोला
6	श्री 105 श्रुतसागरजी	मोयमुंडी	कंची	फा. शु. 13, 2451	श्रवणबेलगोला
7	श्री 105 मल्लीसागर जी	तवनापा	गण्ठदगेकर	मा. शु. 11, 2453	बारामती
8	श्री 105 आदिसागर जी	तवनापा	बेलगांव	पौ. शु.7, 2454	अक्कलकोट
9	श्री 105 अनंतसागरजी	लक्ष्मण	कुड़ची	पौ. शु.7, 2454	अक्कलकोट
10	श्री 105 विमलसागर जी	अण्णप्पा	शापुर, बेलगांव	फा. शु. 9, 2454	शिखर जी क्षेत्र
11	श्री 105 अजितकीर्तिजी	ब्र. प्यारेलाल जी	कान्सपुर सागर	मग. शु. 15, 2456	सोनागिरी
12	श्री 105 पार्श्वकीर्तिजी	ब्र. रतनलाल जी	मालगांव	ज्ये. शु. 14, 2459	आनंदपुर कालू
13	श्री 105 अजीतकीर्तिजी	ब्र. सालगराम	आगरा	फा. शु. 11, 2460	प्रतापगढ़
14	श्री 105 समंतभद्र	ब्र. देवीचन्द जी	करमाला	मग. शु.6, 2460	ब्यावर
15	श्री 105 चन्द्रकीर्ति जी	कनकमलजी अग्रवाल	अलवर	का. शु. 13, 2461	उदयपुर
16	श्री 105 अर्हद्वली जी	जीवंधर जी	बागेवाड़ी	का. शु.3, 2461	गोरल
17	श्री 105 चन्द्रसागर जी	खुशालचंद जी	नांदगांव	–	कुंभोज
18	श्री 105 वीर सागरजी	ब्र. हीरालाल	वीरगांव	–	कुंभोज
19	श्री 105 सुमतिसागर जी	–	फलटण	संवत् 1996	नांद्रे
20	श्री 105 पायसागर जी	–	बेलगांव	-	-
21	श्री 105 अनंतकीर्तिजी	–	करवीशियापुर वाले	-	-
22	श्री 105 भव्यसागर जी	–	–	-	-
23	श्री 105 सन्मति सागरजी	देवगौड़ा	–	-	-

24	श्री 105 देवसेन जी	-	-	-	-
25	श्री 105 अमोघसागर जी	हीरालाल गांधी	लासुर्णे (महाराष्ट्र)	-	-
26	श्री 105 सीमन्धर जी	-	-	-	-
27	श्री 105 सिद्धसागर जी	भरमप्पा	-	28 अगस्त 1955	कुंथलगिरी
28	श्री 105 भद्रबाहु जी	-	-	-	-

स्त्रोत -

- क्र. सं. 1 से 16 आचार्यश्री शान्तिसागर जी के संघ की हस्तलिखित डायरी से
- क्र.सं. 17 से 18 श्री शान्तिसागर महामुनि का चरित्र (द्वितीय संस्करण) (वंशीधर जी) पृ. 38
- क्र.सं. 19 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 34, (अष्ट्म संस्करण) पृ. 95
- क्र.सं. 20 से 21 श्री शान्तिसागर महामुनि का चरित्र (द्वितीय संस्करण) (वंशीधर जी) पृ. 53
- क्रमांक। 22 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (हिन्दी) (अ. श्री कुन्थुसागर जी) पृ. 132
- क्रमांक। 23 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (हिन्दी) (अ. श्री कुन्थुसागर जी) पृ. 138
- क्रमांक। 24 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 33
- क्रमांक। 25 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 142
- क्रमांक। 26 आचार्य श्री शांतिसागर चरितम् (मराठी) (अ. श्री कुंथुसागर जी) पृ. 110
- क्र.सं. 27 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 310, (अष्ट्म संस्करण) पृ. 422
- क्र.सं. 28 जैन मित्र, सन् 1956 (8-1)

क्षुल्लिका दीक्षा

क्र.	क्षुल्लिका अवस्था का नाम	पूर्व का नाम	निवासी	दीक्षा तिथि संवत्	दीक्षा स्थल
1	श्री 105 अनंतमती	अवल बाई	सोलापुर	मग. कृ. 11, 2453	बाव्ठे
2	श्री 105 चन्द्रमती	केशरबाई	लोणंद	भा. शु. 11, 2453	बाहुबली
3	श्री 105 विमलमती	विलासमती	उदगांव	फा. शु. 9, 2454	श्री शिखरजी
4	श्री 105 अजितमती	मरुदेवी	दूधगांव	फा. शु. 9, 2454	श्री शिखरजी
5	श्री 105 कुंथुमती	कुंदनबाई काले	नांदगांव	वै. कृ. 8, 2454	हस्तिनापुर
6	श्री 105 जिनमती	ब्र. कंकुबाई	सोलापुर	का. शु. 3, 2463	गोरल
7	श्री 105 सुमतिमती	गेंदबाई	जयपुर	का. शु. 3, 2463	गोरल
8	श्री 105 ज्ञानमती	-	-	-	-
9	श्री 105 पार्श्वमती	ताराबाई	-	-	-
10	श्री 105 विद्यामती	-	-	-	-
11	श्री 105 अनंतमती	-	-	-	-
12	श्री 105 राजमती	-	-	-	-
13	श्री 105 जिनमती	-	-	-	-

स्रोत –

- क्र. सं. 1 से 8 शांति सिंधु विशेषांक, 16 जुलाई 1937
- क्र.सं. 9 आचार्यश्री शान्तिसागर चरितम् (मराठी) (आ. श्री कुन्थुसागर जी) पृ. 110
- क्र.सं. 10 चारित्र चक्रवर्ती, (द्वितीय संस्करण) पृ. 372, (अष्टम् संस्करण) पृ. 496
- क्र.सं. 11 से 14 जैन मित्र, सन् 1956 (8-1)

❖ **विशेष** – आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज द्वारा दीक्षा के संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित हैं –

1. अक्कलकोट में श्री 105 नमिसागर जी (पूर्व नाम होणामा शिवापुर वाले) पौ.शु. 6, 2454 को एलक दीक्षा एवं श्री 105 आदिसागर जी (पूर्व नाम तवनापा बेलगांव वाले) पौ. शु.7, 2454 और श्री 105 अनंतसागरजी (पूर्व नाम लक्ष्मण कुड़ची वाले) पौ. शु.7, 2454 को क्षुल्लक दीक्षा दी गई। इस प्रकार से 1 एलक और दो क्षुल्लक दीक्षाएँ आचार्यश्री द्वारा अक्कलकोट में प्रदान की गई।
2. आषाढ़ शुक्ल 11, 2450 को समडोली में श्री हीरालालजी वीरगांव वालों को मुनिश्री वीरसागर और श्रीनेमाप्पाजी कुडची वालों को श्री नेमीसागर दो मुनिदीक्षा एवं श्री खुशालचन्द जी नांदगांव वालों को श्री चन्द्रसागरजी को एलक दीक्षा, रत्नाबाई पाटील रुकड़ी वालों को श्री 105 शांतिमती आ. शु. 11, 2450 को आर्यिका दीक्षा प्रदान की गई। समडोली में कुल चार दीक्षाएं दी गई।
3. अलीगढ़ में श्री 105 ज्ञानसागर जी (पं. नंदलाल जी चावली वाले) ज्ये. शु.9, 2456 क्षुल्लक दीक्षा दी गई।
4. आषाढ़ शुक्ल 10, 2463 को गजपंथा में क्षुल्लक यशोधरजी को एलक सन्मतिसागरजी नाम से दीक्षा दी। दो दिन बाद ही दूसरी क्षुल्लक दीक्षा देवगौडाजी भोज वालों को आषाढ़ शुक्ल 13, 2463 को गजपंथा में श्री वर्धमानसागरजी नाम से दीक्षा दी।
5. आनंदपुर कालू में श्री 105 पार्श्वकीर्तिजी(गृहस्थावस्था का नाम ब्र. रतनलाल जी मालगांव वाले) ज्ये. शु. 14, 2459 को क्षुल्लक दीक्षा हुई।
6. उदयपुर में श्री 105 चन्द्रकीर्ति जी(पूर्व नाम कनकमलजी अग्रवाल अलवर वाले) का. शु. 13, 2461 को क्षुल्लक दीक्षा हुई है।
7. ऐनापुर में श्री 108 नेमीसागर जी (पुत्तूर कर्नाटक) ज्ये. शु.5, 2451 की मुनिदीक्षा हुई।
8. कुंथलगिरि में श्री 105 सिद्धसागर जी(भरमप्पा) 28 अगस्त 1955 को क्षुल्लक दीक्षा हुई।
9. कुंभोज में श्री 105 पार्श्वकीर्तिजी (रामकोट वाले ऐनापुर), भा.शु.14, 2451 में एलक, श्री 105 चन्द्रसागर जी (खुशालचंद जी नांदगांव वाले), श्री 105 वीर सागरजी (ब्र. हीरालाल वीरगांव वाले) क्षुल्लक दीक्षा हुई। कुंभोज में 3 दीक्षाएं हुई।

10. गोकाक में श्री 105 पारीससागर जी (पिताम्बर गोकाक) का. शु. 14, 2450, श्री 105 नेमिसागरजी (श्री नेमण्णा कुड़ची वाले), श्री 105 पायसागर जी की एलक दीक्षा हुई। ये तीन दीक्षाएं गोकाक में हुई।

11. गोरल में श्री 105 अर्हद्बली जी(जीवंधर जी बागेवाड़ी) का. शु.3, 2461 गोरल की क्षुल्लक दीक्षा, श्री 105 जिनमती (ब्र. कंकुबाई सोलापुर) का. शु. 3, 2463 की क्षुल्लिका दीक्षा, श्री 105 सुमतिमती (गेंदबाई जयपुर) का. शु. 3, 2463 की क्षुल्लिका दीक्षा हुई। गोरल में कुल तीन दीक्षाएं हुई।

12. चित्तौड़ में श्री 105 चन्द्रमती (क्षु. चंद्रमती लोणंद) मा.शु.5, 2460 की आर्यिका दीक्षा हुई।

13. तिजारा में श्री 105 यशोधर जी (कुलप्पा भरमप्पा मिरजे पाच्छापुर) मा. शु. 10, 2458 की क्षुल्लक दीक्षा हुई।

14. नांद्रे में श्री 105 सुमतिसागर जी फलटण संवत् 1996 में क्षुल्लक दीक्षा हुई।

15. प्रतापगढ़ में श्री 108 आदिसागर जी (क्षु. आदिसागर गया) फा. शु. 11, 2460 में मुनि, श्री 108 सुधर्मसागर जी(क्षु. ज्ञानसागर चावली) फा. शु.12, 2460 में मुनि, श्री 105 अजितकीर्तिजी (ब्र. सालगराम आगरा) फा. शु. 11, 2460 में क्षुल्लक दीक्षा हुई। प्रतापगढ़ कुल तीन दीक्षाएं हुई।

16. बारामती में श्री 105 मल्लीसागर जी (तवनापा गण्ठदगेकर) मा. शु. 11, 2453 में क्षुल्लक दीक्षा हुई।

17. वाले में श्री 105 अनंतमती (अवल बाई सोलापुर) मग. कृ. 11, 2453 में क्षुल्लिका दीक्षा हुई।

18. बाहुबली में श्री 105 चन्द्रमती (केशरबाई लोणंद) भा. शु. 11, 2453 में क्षुल्लिका दीक्षा हुई।

19. वारामती में श्री108 वर्धमानसागरजी (एलक वर्धमानसागर भोज) मग. शु.6, सन् 1936 में मुनि दीक्षा हुई।

20. ब्यावर में दो क्षुल्लक दीक्षाएं हुई, श्री 105 नेमकीर्तिजी (ब्र. चांदमल जी गया) श्रा. शु.6, 2459 और श्री 105 समंतभद्रजी (ब्र. देवीचन्द जी करमाला) मग. शु.6, 2460।

21. शिखर जी में श्री 105 विमलसागर जी (अण्णप्पा शापुर, बेलगांव) फा. शु. 9, 2454 में क्षुल्लक दीक्षा, श्री 105 विमलमती (विलासमती उदगांव) फा. शु. 9, 2454 की क्षुल्लिका दीक्षा, श्री 105 अजितमती (मरूदेवी दूधगांव) फा. शु. 9, 2454 की क्षुल्लिका दीक्षा हुई। कुल तीन दीक्षाएं शिखरजी में हुई।

22. श्रवणबेलगोला में श्री 108 वृषभसेन जी, जो अड़गुर(हासन) के रहने वाले थे। उनकी मुनि दीक्षा फा. शु.8, 2451, श्री 105 पायसागरजी, जो पुत्तूर के रहने वाले थे। उनकी एलक दीक्षा फा.शु. 9, 2451, श्री 105 शुभचंद्रजी (देवपाल नैनार अंतमंगल कंची) फा. शु. 13, 2451 की क्षुल्लक दीक्षा एवं श्री 105 श्रुतसागरजी (मोयमुंडी कंची) फा. शु. 13, 2451 की क्षुल्लक दीक्षा हुई।

23. सोनागिरिजी में श्री 108 पायसागर जी (गोकाक वाले) मा. शु. 5, 2456 को मुनिदीक्षा, श्री 108 कुंथुसागर जी (पार्श्वकीर्ति ऐनापुर) मा. शु.5,2456 को मुनिदीक्षा, श्री 108 नमिसागर जी (एलक नमिसागर शिवापुर) मा. शु. 5, 2456 को मुनिदीक्षा, श्री 108 चन्द्रसागर जी (एलक चन्द्रसागर नांद गांव वाले) मा. शु.5,2456 को मुनिदीक्षा और श्री 105 अजितकीर्तिजी (ब्र. प्यारेलाल जी कान्सपुर सागर) मग. शु. 15, 2456 को क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई।

24. हस्तिनापुर में श्री 105 कुंथुमती (कुंदनबाई काले नांदगांव) वै. कृ. 8, 2454 को क्षुल्लिका दीक्षा प्रदान की गई।

उपरोक्त विवरण के आधार पर ज्ञात होता है कि आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने कुल 88 दीक्षाएं दी हैं। जिसमें 26 मुनि, 5 आर्यिकाएं, 16 एलक, 28 क्षुल्लक और 13 क्षुल्लिका दीक्षाएं प्रदान की गई हैं। इतनी दीक्षाओं के प्रमाण प्राप्त होते हैं। जिसमें 46 दीक्षाओं के स्थान और तिथियाँ प्राप्त होती है। शेष दीक्षाओं के संबंध में तिथियाँ प्राप्त होती है तो उनका स्थान प्राप्त नहीं होता है। कहीं कहीं स्थान प्राप्त है तो तिथियाँ प्राप्त नहीं है।

श्रमण संस्कृति की अक्षुण्ण परम्परा को जीवंत बनाते हुए चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज ने स्वयं का कल्याण किया है। भव्य जीवों को सम्यक् मार्ग दिखाया है। इसी परम्परा का अनुशरण करते हुए वात्सल्य वारिधि पंचम पट्टाचार्यश्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री 108 शांतिसागरजी महाराज की प्रतिमूर्ति के रूप में हमें दिख रहे हैं। वात्सल्यवारिधि पंचम पट्टाचार्यश्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज के ससंघ चरणों में कोटि-कोटि नमोस्तु!!